शेख़ फ़रीद – सबद ८२

फरीदा पंख पराहुणी दुनी सुहावा बागु ॥

सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८२

फरीदा पंख पराहुणी दुनी सुहावा बागु ॥
नउबति वजी सुबह सिउ चलण का करि साजु ॥७९॥

सार: हमारे इंद्रिय अनुभव जीवंत होते हैं लेकिन वह क्षणभंगुर, निरंतर बदलते हुए नज़रिये के अनुभव-क्षेत्र का हिस्सा हैं। जो हम देखते, सुनते और समझते हैं, वह वास्तविक प्रतीत होता है, लेकिन वह हमेशा परिवर्तनशील है। संसार स्थिर लगता है पर यह स्थिरता मुख्यतः हमारी इंद्रियों और हमारी धारणाओं द्वारा निर्मित कथाओं पर आधारित होती है। यह दृष्टिकोण स्पष्ट करता है कि जिसे हम स्थायी वास्तविकता मानते हैं, वह वास्तव में केवल अनुभवों का एक अस्थायी प्रदर्शन है। इस सत्य को स्वीकार करने से जीवन के प्रति हमारी क़द्र बढ़ती है और हमें यह स्मरण रहता है कि जीवन का असली जादू इसकी नश्वरता में ही निहित है।

फरीदा पंख पराहुणी दुनी सुहावा बागु ॥
फ़रीद कहते हैं कि यह संसार एक सुंदर सजा हुआ बग़ीचा है जहाँ चिड़िया एक मेहमान है। यह दर्शाता है कि हमारे इन्द्रिय अनुभव हमारे मनमोहक, भ्रामक माहौल में सामयिक ही होते हैं।

नउबति वजी सुबह सिउ चलण का करि साजु ॥७९॥
सुबह निकलने की तैयारी के लिए ढोल बजाए जा रहे हैं। यह समय की सच्चाई के प्रति जागने का प्रतीक है, हर नया दिन तैयार होकर, भीतर से जुड़कर और सदा रहने की कल्पना ख़त्म करने में देर न करने की याद दिलाता है। (७९)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद हमें याद दिलाते हैं कि चाहे हम ध्यान दें या नहीं, समय निरंतर चलता रहता है। हम अक्सर ऐसा बर्ताव करते हैं जैसे ज़िंदगी की कोई सीमा नहीं है और अनगिनत अवसर की झूठी

सुविधा के भ्रम में उन चीज़ों को टाल देते हैं जो वास्तविक मूल्य रखती हैं। हर सूरज डूबने और उगने का समय इस ग़लतफ़हमी को दूर कर देता है। वह हमें तैयार रहने के लिए हिम्मत देते हैं, डर से नहीं बल्कि अपने विशेष मूल्यों के साथ जुड़कर और जो ज़रूरी है उसे प्राथमिकता देकर। समय की नश्वरता के स्वभाव को पहचानने से दैनिक आम पल भी मूल्यवान हो जाते हैं। हर दिन कल के पक्के वादे का इंतज़ार करने के बजाय आज में सच्चाई से जीने का निमंत्रण बन जाता है।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com